

जलवायु-स्मार्ट कृषि के माध्यम से जलवायु परिवर्तन पर नियंत्रण

यह एडिटरियल 25/11/2023 को 'द हद्वि' में प्रकाशित [“Need for climate-smart agriculture in India”](#) लेख पर आधारित है। इसमें जलवायु परिवर्तन एवं खाद्य असुरक्षा की चुनौतियों के बारे में चर्चा की गई है और वचिार कथिा गया है जलवायु-स्मार्ट कृषि (CSA) कसि प्रकार उनहें संबोधति करने के लथि एक व्यवहार्य विकल्प सदिध हो सकता है।

प्रलिमिस के लथि:

[जलवायु-स्मार्ट कृषि](#), [हीट वेव्स](#), [आकासमकि बाढ \(फ्लेश फलड\)](#), [चकरवात](#), [पेरसि समझौता](#), [कृषि वानकि](#), [परशुिध सचिाई](#), [कारबन पृथककरण](#), [राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन अनुकूलन कोष \(NAFCC\)](#), [बायोटेक-कसिान](#), [परमपरागत कृषि वकिस योजना \(PKVY\)](#), [कारबन पृथककरण](#)।

मेन्स के लथि:

जलवायु स्मार्ट कृषि: लाभ, चुनौतियीं, सरकारी पहल और आगे की राह।

21वीं सदी में मानव जाति के समक्ष वदियमान दो सबसे महत्त्वपूर्ण मुद्दे हैं- [जलवायु परिवर्तन](#) (climate change) और [खाद्य असुरक्षा \(food insecurity\)](#)। जलवायु परिवर्तन के कुछ जारी प्रभाव जैसे [हीट वेव्स](#), [आकसमकि बाढ](#), [सूखा](#) और [चकरवात](#) जीवन और आजीविका को नकारात्मक रूप से प्रभावति कर रहे हैं।

कथति तौर पर [वश्व के दकषिणी महाद्वीप](#) जलवायु परिवर्तन के कारण गंभीर सूखे का सामना कर रहे हैं, जसिका कृषि उत्पादन और कसिानों की आजीविका पर नकारात्मक प्रभाव पड रहा है। [जनसंख्या वसितार](#) और [आहार परिवर्तन](#) दोनों ही [खाद्य की मांग में वृद्धि](#) में योगदान दे रहे हैं। कृषि उत्पादन पर पर्यावरण का प्रभाव कठनिाई को और बढा ही रहा है।

[जलवायु परिवर्तन](#) के परिणामस्वरूप [पारंपरिक कृषि पद्धतियीं कम उत्पादक होती जा रही हैं](#)। जलवायु परिवर्तन कसिानों के समक्ष वदियमान खतरों को और बढा रहा है, जसिसे वे अपने कृषि अभ्यासों के पुनरमूल्यांकन के लथि प्रेरति हो रहे हैं। जलवायु परिवर्तन के नकारात्मक प्रभावों को कम करने के लथि कसिान वभिनिन प्रकार के अनुकूलन उपाय कर रहे हैं। जलवायु परिवर्तन के अनुकूलन एवं शमन की दोहरी चुनौतियीं [औखाद्य मांग को पूरा करने के लथि वर्ष 2050 तक कृषि उत्पादन में 60% की वृद्धि लाने की तीव्र आवश्यकता](#) से एक समग्र रणनीति की आवश्यकता प्रेरति हुई है।

Climate-Smart Agriculture



Helps farmers build resilience to adapt to climate change



Sustainably increases agricultural production and incomes



Reduces greenhouse gases, where possible

To achieve all this, Climate-Smart Agriculture advocates for the use of farmers' local knowledge to ensure easy adoption.



Food and Agriculture Organization of the United Nations

Working for #ZeroHunger

जलवायु-स्मार्ट कृषि क्या है?

- **जलवायु-कुशल या जलवायु-स्मार्ट कृषि (Climate-Smart Agriculture)** एक दृष्टिकोण है जो कृषि-खाद्य प्रणालियों को हरति एवं जलवायु प्रत्यास्थी अभ्यासों में बदलने के लिये कार्रवाइयों को निर्देशित करने में मदद करती है। यह **सतत विकास लक्ष्य (SDGs)** और **पेरिस समझौते** जैसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सहमत लक्ष्यों तक पहुँचने का समर्थन करती है।
- **इसका लक्ष्य तीन मुख्य उद्देश्यों की पूर्ति करना है:**
 - कृषि उत्पादकता और आय में सतत रूप से वृद्धि करना
 - जलवायु परिवर्तन के प्रति अनुकूलन और प्रत्यास्थता का निर्माण करना
 - ग्रीनहाउस गैस (GHG) उत्सर्जन को कम करना और/या उन्हें समाप्त करना
- जलवायु-स्मार्ट कृषि अभ्यासों के कुछ उदाहरण हैं:
 - **जलवायु-प्रत्यास्थी फसल कस्मों की खेती करना (Cultivating Climate-Resilient Crop Varieties):** ऐसी फसलों की खेती जो तापमान एवं वर्षा परिवर्तन, कीटों, बीमारियों और लवणता के प्रति अधिक प्रतिरोधी हों, किसानों को फसल उत्पादन पर जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों से निपटने में मदद कर सकती हैं।
 - उदाहरण के लिये, उप-सहारा अफ्रीका में **सूखा-सहिष्णु मक्के** की कस्मों को विकसित और प्रसारित किया गया है, जिससे लाखों छोटे किसानों को लाभ प्राप्त हुआ है।
 - **संरक्षण कृषि (Conservation Agriculture):** बिना जुताई एवं कम जुताई वाली खेती (No-till and reduced-tillage cultivation), मृदा को ढँके रखने के लिये फसल अवशेषों एवं फसल आवरण का उपयोग करना और मृदा की उर्वरता एवं जैव विविधता को बढ़ाने के लिये फसल चक्र या कर्प रोटेशन जैसे कुछ अभ्यास हैं जो **संरक्षण कृषि** के अंतर्गत शामिल हैं।
 - ये अभ्यास **मृदा के कटाव को कम कर सकते हैं, जलधारण क्षमता में सुधार कर सकते हैं, कार्बन पृथक्करण (carbon sequestration) को बढ़ा सकते हैं** और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम कर सकते हैं।
 - **कृषि वानिकी (Agroforestry):** वृक्षों एवं झाड़ियों को फसलों एवं पशुधन के साथ एकीकृत कर अधिक विविध और उत्पादक कृषि प्रणालियों का सृजन किया जा सकता है जो किसानों और पर्यावरण के लिये विभिन्न लाभ प्रदान करती हैं।
 - कृषि वानिकी मृदा की गुणवत्ता बढ़ा सकती है, **जल की बचत कर सकती है, आय के स्रोतों में विविधता ला सकती है**, ईंधन लकड़ी एवं चारा उपलब्ध करा सकती है और कार्बन पृथक्करण में योगदान कर सकती है।

- **परिशुद्ध संचिाई (Precision Irrigation):** ड्रिप संचिाई, स्प्रंकिलर संचिाई, वर्षा जल संचयन आदि प्रभावकारी जलवायु-स्मार्ट कृषि रणनीतियों के उदाहरण हैं जिनका उपयोग जल उपयोग दक्षता को अधिकतम करने और पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभावों को कम करने के लिये किया जा सकता है।
 - वास्तविक समय में मृदा की नमी और फसल की जल आवश्यकताओं की निगरानी करने के लिये परिशुद्ध संचिाई में सेंसर, ड्रोन और उपग्रह इमेजरी जैसे घटकों का योग किया जा सकता है।
- **परिवर्तनीय दर उर्वरकीकरण (Variable Rate Fertilization):** सही समय और स्थान पर सही मात्रा में उर्वरक के प्रयोग से फसल की पैदावार को इष्टतम किया जा सकता है तथा पोषक तत्वों की हानि और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम किया जा सकता है।
 - प्रत्येक फसल और खेत की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप उर्वरक के प्रयोग के लिये मृदा परीक्षण, रिमोट सेंसिंग और परिशुद्ध कृषि प्रौद्योगिकियों का उपयोग कर परिवर्तनीय दर उर्वरकी की स्थिति प्राप्त की जा सकती है।

जलवायु स्मार्ट कृषि के प्रमुख लाभ

- **कृषि उत्पादकता में वृद्धि:** चूँकि उत्पादन संसाधन कम होते जा रहे हैं और कृषि उत्पादों की मांग बढ़ रही है, जलवायु परिवर्तनशीलता (climate variability) से निपटने के लिये संसाधन-कुशल खेती (resource-efficient farming) की आवश्यकता है।
 - भारत में जलवायु परिवर्तन के कारण फसल उपज में गिरावट (वर्ष 2010 और 2039 के बीच) 9% के उच्च स्तर तक पहुँच सकती है।
 - CSA जलवायु अनुकूलन, शमन और **खाद्य सुरक्षा** में महत्वपूर्ण योगदान देती है।
 - भारत में उपयोग की जाने वाली विभिन्न जलवायु-स्मार्ट तकनीकों के अध्ययन से पता चलता है कि कृषि उत्पादन में सुधार करती हैं, कृषि को सतत/संवहनीय एवं विश्वसनीय बनाती हैं और GHG उत्सर्जन को कम करती हैं।
 - गेहूँ उत्पादन के संबंध में उत्तर-पश्चिमि सिंधु-गंगा मैदान के एक अध्ययन से पता चलता है कि स्थल-विशिष्ट जुताई-रहति खेती उर्वरक प्रबंधन के लिये लाभप्रद है और GHG उत्सर्जन को कम करते हुए कृषि उपज, पोषक तत्व उपयोग दक्षता एवं लाभप्रदता को बढ़ावा दे सकती है।
 - इसके अलावा, CSA का महत्व पारस्थितिक स्थिरता बनाए रखते हुए कृषि उत्पादन बढ़ाने की क्षमता में भी निहित है।
 - यह सहसंबंध न केवल एक वांछित परिणाम है, बल्कि गिरम होतेग्रह में दीर्घकालिक खाद्य सुरक्षा एवं संवहनीय संसाधन उपयोग के लिये भी आवश्यक है।
- **GHG उत्सर्जन में कमी:** कृषि क्षेत्र बढ़ी मात्रा में GHG का उत्सर्जन करता है। वर्ष 2018 में GHG उत्सर्जन में कृषि क्षेत्र की हिससेदारी 17% थी। इस परिदृश्य में, GHG उत्सर्जन को कम करने और जैव विविधता की रक्षा करने के लिये CSA का कार्यान्वयन महत्वपूर्ण है।
 - इसके अलावा, यह कृषि भूमि में कार्बन भंडारण की संवर्द्धा में सहायता करता है।
 - GHG उत्सर्जन को कम कर 'ग्लोबल वार्मिंग' को सीमित करने का पेरिस समझौते का लक्ष्य प्रत्यक्ष रूप से CSA की सफलता से संबद्ध है।
 - कृषि धानिकी और कार्बन पृथक्करण CSA उपायों के दो उदाहरण हैं जो भारत को अपने अंतरराष्ट्रीय दायित्वों की पूर्ति करने और जलवायु परिवर्तन के वरिद्ध वैश्विक संघर्ष में योगदान देने में मदद कर सकते हैं।
- **छोटे और सीमांत किसानों के लिये सहायता:** अधिकांश भारतीय किसान छोटे या सीमांत किसान हैं। इस परिदृश्य में, उनके लाभ की वृद्धि करने में CSA महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। जलवायु भेद्यता (climate vulnerability) और कृषि महत्त्व का अंतरसंबंध भारत को एक ऐसे अनूठे परिदृश्य में रखता है जहाँ CSA को अपनाना न केवल वांछनीय है बल्कि आवश्यक भी है।
- **जैव विविधता संरक्षण:** CSA का पारस्थितिकी तंत्र-आधारित दृष्टिकोण और विभिन्न फसल कसिमें फसल भूमि एवं जंगली क्षेत्रों को एक साथ सह-अस्तित्व में रखने में मदद करती है। यह सहयोगात्मक प्रयास देशी पौध प्रजातियों को सुरक्षित रखने, परागणकों की आबादी को स्थिर बनाये रखने और पर्यावास क्षरण के प्रभावों को कम करने में मदद करता है।
- **जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करना:** CSA फसल विविधीकरण को बढ़ावा देती है, जल दक्षता बढ़ाती है और सूखा-प्रतरोधी फसल प्रकारों को एकीकृत करती है—जो जलवायु परिवर्तन के घटितकारी प्रभावों को कम करने में मदद करती है।
 - CSA जलवायु संबंधी खतरों और झटकों के जोखिम को कम कर लघु मौसम अवधि एवं अनियमित मौसम पैटर्न जैसे दीर्घकालिक तनावों का सामना करने में प्रत्यास्थता को बढ़ाती है।

भारत में जलवायु स्मार्ट कृषि के समक्ष वदियमान प्रमुख चुनौतियाँ

- **जागरूकता और ज्ञान की कमी:** नई कृषि पद्धतियों को अपनाने में यह एक आम चुनौती है। किसानों और वसितार कार्यकर्ताओं (extension workers) के बीच CSA के लाभों या इन अभ्यासों को प्रभावी ढंग से लागू करने के तरीके के बारे में जानकारी की कमी हो सकती है।
- **वित्त, बीमा और बाजार तक सीमिति पहुँच:** किसानों के लिये CSA से जुड़ी नई तकनीकों एवं अभ्यासों में निवेश कर सकने के लिये वित्तपोषण महत्वपूर्ण है। वित्त, बीमा और बाजार तक पहुँच की कमी CSA को अपनाने में बाधक सिद्ध हो सकती है।
- **अपर्याप्त अवसंरचना और संस्थागत समर्थन:** CSA की सफलता सहायक अवसंरचना और संस्थानों पर निर्भर करती है। इसमें संचिाई प्रणालियाँ, भंडारण सुविधाएँ और विभिन्न संगठन शामिल हैं जो सहायता एवं मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं।
- **उच्च लागत और जोखिम:** नई प्रौद्योगिकियों और अभ्यासों को अपनाने से संबंध आरंभिक लागत किसानों के लिये एक महत्वपूर्ण बाधा सिद्ध हो सकती है। इसके अतिरिक्त, जोखिम की आशंका भी इसे अपनाने से हतोत्साहित कर सकती है।
- **नीति और नियामक बाधाएँ:** जो नीतियाँ CSA का समर्थन या प्रोत्साहन नहीं करती, वे एक बड़ी बाधा सिद्ध हो सकती हैं। नियामक बाधाएँ भी CSA अभ्यासों के वसितार की गति को मंद कर सकती हैं।

जलवायु-स्मार्ट कृषि को बेहतर ढंग से अपनाने के लिये कौन-से उपाय किये जाने चाहिये?

- **क्षमता निर्माण और जागरूकता:** प्रशिक्षण, प्रदर्शन, किसानों का परस्पर संपर्क और मास मीडिया के माध्यम से CSA के सिद्धांतों एवं अभ्यासों पर किसानों और वसितार कार्यकर्ताओं की क्षमता एवं जागरूकता की वृद्धि करना।
- **वित्तीय और तकनीकी सहायता:** CSA प्रौद्योगिकियों और नवाचारों को अपनाने के लिये किसानों को वित्तीय एवं तकनीकी सहायता (जैसे सब्सिडी, ऋण, बीमा, बाजार लकिंज और डिजिटल प्लेटफॉर्म) प्रदान करना।
- **नीतित्त और संस्थागत सुदृढीकरण:** CSA को बढ़ावा देने और इसके सत्तर को बढ़ाने के लिये नीतित्त एवं संस्थागत ढाँचे को सुदृढ करना, जैसे जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय एवं राज्य कार्य-योजनाओं में CSA को एकीकृत करना, एक समरपत्ति CSA फंड का सृजन करना और CSA समन्वय समत्तिकी स्थापना करना।
- **हाशयि पर सथति समूहों को भागीदारी के लिये प्रोत्साहति करना:** CSA योजना-नरिमाण एवं कारयानवयन में महिलाओं और हाशयि पर सथति समूहों की भागीदारी एवं सशक्तीकरण को प्रोत्साहति करना, जैसे कऱि CSA समत्तियों में उनका प्रतनिधित्व सुनश्चिति करना, उन्हें संसाधनों एवं अवसरों तक समान पहुँच प्रदान करना और उनकी वशिषिट आवश्यकताओं एवं प्राथमकिताओं को संबोधति करना।
- **नवाचार और सहकारयता का समरथन:** संदरभ-वशिषिट एवं मांग-परेरति CSA समाधानों को वकिसति करने और प्रसारति करने के लिये वभिन्निन अभकिरताओं एवं कषेत्रों के बीच नवाचार और सहकारयता को बढ़ावा देना, जैसे कऱि भागीदारीपूरण अनुसंधान में किसानों को शामिल करना, सार्वजनकि-नजिी भागीदारी का सृजन करना और बहु-हतिधारक मंचों की सुवधि प्रदान करना।

जलवायु-स्मार्ट कृषि के लिये प्रमुख पहलें

- **राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन अनुकूलन कोष (National Adaptation Fund for Climate Change), जलवायु प्रतयासथी/सुनमय कृषि पर राष्ट्रीय नवाचार मृदा स्वासथय मशिण (Soil Health Mission), प्रधानमंतरी कृषि सचिाई योजना, परंपरागत कृषि वकिसा योजना, बायोटेक-कसिान (Biotech-KISAN) और जलवायु-स्मार्ट ग्राम (Climate Smart Village) भारत में CSA पर केंदरति सरकारी पहलों के कुछ प्रमुख उदाहरण हैं।**
- वभिन्निन सार्वजनकि और नजिी कषेत्र की संस्थाएँ, जैसे कसिान-उत्पादक संगठन (FPOs) और गैर-सरकारी संगठन (NGOs) भी CSA को अपनाने की दशिा में कार्य कर रहे हैं।
 - **जलवायु परिवर्तन, कृषि और खादय सुरक्षा (Climate Change, Agriculture and Food Security- CCAFS)** पर CGIAR अनुसंधान कार्यक्रम, जो अनुसंधान संगठनों की एक वैश्वकि साझेदारी है, खादय सुरक्षा, गरीबी और जलवायु परिवर्तन की परस्पर संबद्ध चुनौतियों के समाधान का उददेश्य रखता है।
 - वशिषिव बैंक समूह, जो वकिसाशील देशों में CSA परयोजनाओं एवं कार्यक्रमों के समरथन के लिये ऋण, अनुदान एवं तकनीकी सहायता प्रदान करता है।
 - **जलवायु-स्मार्ट कृषि पर वैश्वकि गठबंधन (Global Alliance for Climate-Smart Agriculture- GACSA)**, जो एक स्वैच्छकि मंच है, CSA के संबंध में ज्ञान साझेदारी, नीतिसंवाद और नविश की सुवधि के लिये सरकारों, नागरकि समाज, कसिानों, अनुसंधान संस्थानों और नजिी कषेत्र को एक साथ लाता है।
 - **'क्लाइमेट-स्मार्ट एगरीकलचर यूथ नेटवरक' (CSAYN)**, जो वभिन्निन देशों के युवाओं का एक समूह है जो युवाओं और अन्य हतिधारकों के बीच CSA जागरूकता एवं काररवाई को बढ़ावा दे रहा है।

नषिकरष

जलवायु-स्मार्ट कृषि (CSA) में खादय सुरक्षा सुनश्चिति करने, कसिानों को सशक्त बनाने और नवाचार, प्रतयासथता एवं संवहनीयता को संयुक्त कर हमारे संवेदनशील पारसिथितिकी तंतुर की रक्षा करने की क्षमता है। जलवायु परिवर्तन के परदृश्य में, CSA एक संवहनीय भवषिय सुनश्चिति करने के लिये सकरयि वशिषिव के लिये प्रेरणा और रूपांतरण के एक स्रोत के रूप में अहम उपसथतिरिखता है।

अभ्यास प्रश्न: जलवायु-स्मार्ट कृषि (CSA) से आप क्या समझते हैं? जलवायु परिवर्तन और खादय असुरक्षा की दोहरी चुनौतियों से नषिटने में CSA के महत्त्व की चर्चा कीजिये और CSA के अंगीकरण को बढ़ावा देने के लिये आवश्यक उपायों का मूल्यांकन कीजिये।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष प्रश्न (PYQ)

????????

प्रश्न 1. भारतीय कृषि में परसिथितियों के संदरभ में, "संरक्षण कृषि" की संकल्पना का महत्त्व बढ़ जाता है। नमिनलखिति में से कौन-कौन से संरक्षण कृषि के अंतरगत आते हैं? (2018)

1. एकधान्य कृषि पद्धतियों का परहार
2. न्यूनतम जोत को अपनाना
3. बागानी फसलों की खेती का परहार
4. मृदा धरातल को ढकने के लिए फसल अवशिषिट का उपयोग
5. स्थानकि एवं कालकि फसल अनुक्रमण

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:

- (a) 1,3 और 4
- (b) 2,3,4 और 5
- (c) 2, 4 और 5
- (d) 1, 2,3 और 5

उत्तर: (c)

प्रश्न 2. 'जलवायु-अनुकूल कृषि के लिए वैश्विक सहबन्ध' (ग्लोबल एलायन्स फॉर क्लाइमेट-स्मार्ट एग्रीकल्चर) (GACSA) के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं

1. GACSA, 2015 में पेरिस में हुए जलवायु शिखर सम्मेलन का एक परिणाम है।
2. GACSA में सदस्यता से कोई बन्धनकारी दायित्व उत्पन्न नहीं होता।
3. GACSA के निर्माण में भारत की साधक भूमिका थी।

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:

- (a) केवल 1 और 3
- (b) केवल 2,
- (c) केवल 2 और 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (b)

प्रश्न 3. जलवायु-अनुकूल कृषि (क्लाइमेट-स्मार्ट एग्रीकल्चर) के लिये भारत की तैयारी के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. भारत में 'जलवायु-स्मार्ट ग्राम (क्लाइमेट-स्मार्ट वल्लिज)' दृष्टिकोण, अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान कार्यक्रम-जलवायु परिवर्तन, कृषि एवं खाद्य सुरक्षा (सी.सी.ए.एफ.एस.) द्वारा संचालित परियोजना का एक भाग है।
2. सी.सी.ए.एफ.एस. परियोजना, अंतरराष्ट्रीय कृषि अनुसंधान हेतु परामर्शदात्री समूह (सी.जी.आई.ए.आर.) के अधीन संचालित किया जाता है, जिसका मुख्यालय पेरिस में है।
3. भारत में सथित अंतरराष्ट्रीय अर्धशुष्क उष्णकटिबंधीय फसल अनुसंधान संस्थान (आई.सी.आर.आई.एस.ए.टी.), सी.जी.आई.ए.आर. के अनुसंधान केंद्रों में से एक है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (d)

??????

प्रश्न 1. उन विभिन्न आर्थिक और सामाजिक-सांस्कृतिक ताकतों पर चर्चा कीजिये जो भारत में कृषि के बढ़ते नारीकरण को प्रेरित कर रही हैं। (2014)

प्रश्न 2. फसल विविधीकरण के समक्ष वर्तमान चुनौतियाँ क्या हैं? उभरती प्रौद्योगिकियाँ फसल विविधीकरण का अवसर कैसे प्रदान करती हैं? (2021)